# बुलंदशहर में इंस्पेक्टर की शहादत ने आरएसएस के मंसूबे को किया नाकाम, यूपी को गुजरात बनाने की थी तैयारी

## आपको तथाकथित राष्ट्रीय मीडिया में इस घटना के इतने तथ्य पढ़ने को नहीं मिलेंगे

**मजदूर मोर्चा ब्यूरो**

लखनऊ: बुलंदशहर के स्याना में यूपी पुलिस के इंस्पेक्टर सुबोध कुमार सिंह की शहादत ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) के एक ऐसे खेल को बिगाड़ दिया, जिसकी तैयारी बड़े स्तर पर और सोच-समझ कर की गई थी। यह तथ्य आला पुलिस अफ़सरों के बयानों और जाँच रिपोर्ट से साफ़ हो गए हैं। हालांकि यूपी सरकार ने सारे मामले में पुलिस को ही फंसाते हुए वहां के एक डीएसपी सत्यप्रकाश शर्मा और चिगरावटी के चौकी इंचार्ज सुरेश कुमार को शुक्रवार देर रात हटा दिया। इस पूरे मामले में यह साफ हो गया कि उत्तर प्रदेश को गुजरात बनाने की गहरी साजिश थी लेकिन एक शहादत ने उस पर पानी फेर दिया।

**बहुत गहरी साजिश रची गई थी**

**स्याना में गौकशी को आधार बनाकर 3 दिसंबर को हिंसा हुई लेकिन उत्तर प्रदेश के आला पुलिस अफसरों और उसके खुफिया विभाग का कहना है कि दरअसल, 1 दिसंबर को जानवरों को काटकर महाब गांव के खेतों में फेंक दिया गया था। 3 दिसंबर को घटनास्थल पर सबसे पहले पहुंचे वहां के तहसीलदार और पुलिस ने पाया कि जानवरों का मांस कई दिन पुराना था। ऐसा इसलिए किया गया था कि 1 दिसंबर से स्याना से कुछ दूरी पर मुसलमानों का इज्तेमा शुरू हुआ था और उसमें कई लाख लोग पहुंच चुके थे। उनमें से बड़ी तादाद में मुसलमानों को स्याना के रास्ते से ही लौटना था। गोपनीय रिपोर्ट कहती है कि योजना यह थी कि गौकशी को आधार बनाकर बड़े पैमाने पर हिंदू-मुसलमान दंगा कराया जाना था, जिसे पूरे राज्य में फैलाया जाना था और इसकी आग को 2019 के लोकसभा चुनावों तक सुलगाया जाना था। इसकी तैयारी नवंबर के आखिरी हफ्ते में तभी शुरू हो गई थी, जब इज्तेमा का ऐलान हुआ था। इसके अलावा अयोध्या में 6 दिसंबर को बाबरी मस्जिद गिराए जाने की बरसी भी नजदीक थी। स्याना के एक कॉलेज में आरएसएस के तमाम फ्रंटल (अनुषांगिक) संगठनों की लगातार बैठकें हो रही थीं, जिनका नेतृत्व मुख्य आरोपी योगेश राज और आरोपी नंबर 2 शिखर अग्रवाल कर रहे थे। योगेश राज बजरंग दल का जिला प्रमुख है और शिखर अग्रवाल भारतीय जनता युवा मोर्चा का नेता है। अभी कई और नाम हैं, जो सामने नहीं आए हैं। लोकल पुलिस वालों के पास इन बैठकों की सूचना थी लेकिन वे अपने आला अफसरों को शेयर नहीं कर रहे थे।**

पूरी रणनीति दो तरीके से बनाई गई थी। स्याना के भाजपा विधायक देवेंद्र सिंह लोधी और इलाके के भाजपा सांसद भोला सिंह को आगे करके आरएसएस इनसे लगातार विभिन्न गांवों में गौकशी की शिकायतें करवा रहा था। ये लोग आला पुलिस अफसरों से लेकर कोतवाली तक में गौकशी की शिकायत कर आरोप लगा रहे थे कि पुलिस किसी मामले में कार्रवाई नहीं कर रही है। जबकि आरएसएस के फ्रंटल संगठन दंगे की योजना तैयार कर रहे थे।

स्याना बुलंदशहर जनपद के सबसे बड़े कस्बों में एक है और हिन्दू संगठनों के सभी नामजद आरोपी इसी थाना क्षेत्र के है। यहां हिन्दू-मुस्लिम एकता की साझा संस्कृति है। पिछली बार यहां कांग्रेस के दिलनवाज खान विधायक थे। अब भाजपा के देवेंद्र सिंह लोधी हैं। स्थानीय लोग मानते है कि जबसे भाजपा के विधायक और सूबे में भाजपा सरकार बनी है तो स्थानीय युवाओं में कट्टर हिंदुत्व उबाल मार रहा है।

**हिंदू-मुस्लिम एकता से आरएसएस परेशान था**

स्याना में हिन्दू-मुस्लिम की आबादी में 60-40 का अनुपात है। बुलंदशहर के दरियापुर में हो रहे इज्तेमा यहां से दूरी 45 किमी दूरी पर था। यहां पिछले तीन दिन से हिन्दू मुस्लिम मिलकर इज्तेमा में जा रहे लोगो का स्वागत कर रहे थे। उनके लिए भंडारा का आयोजन किया गया था। जिस प्रकार से पिछली कावंड़ यात्रा में मुस्लिमों ने शिविर लगाकर भोले के भक्तों की सेवा की थी, उससे स्थानीय हिन्दू समाज मे बेइंतहा खुशी थी और इज्तेमा के लिए आने वाले अकीदतमंदों को पूरी सब्जी और लड्डू का भंडारा चल रहा था। इस भंडारे के आयोजक स्याना के अरविंद शर्मा बताते है उनके साथियों ने मिलकर 50 हजार लोगों के खाने की व्यवस्था की थी। स्याना के इतिहास में कभी साम्प्रदायिक झगड़ा नही हुआ है। हाल ही में हुई रामलीला में मुसलमानों का बड़ा सहयोग रहा था और रामलीला कमेटी ने मुसलमानो को अपने मंच पर बुलाकर सम्मान किया था। इज्तेमा में शिरकत करने जा रहे अकीदतमंदों के लिए बुलंदशहर में एक शिवमंदिर के दरवाजे खोल दिये गए थे जहां मुसलमानो ने नमाज पढ़ी थी। पुलिस ने भी बेहतरीन व्यवस्था की थी, चौतरफा पुलिस की तारीफ हो रही थी, कावंड़ियों की तरह हिन्दू समाज में आ रहे अकीदतमंदों को सम्मान दे रहा था। इन सब बातों से आरएसएस के लोग वाकिफ थे और परेशान भी थे। वे इस स्थिति को बदलने के लिए बार-बार गौकशी की फर्जी शिकायतें कर रहे थे।

**उस दिन क्या हुआ**

3 दिसम्बर को सुबह सुबह 9 बजे से पहले स्याना कोतवाली के इंस्पेक्टर सुबोध कुमार को पास के गांव महाब के एक भूतपूर्व प्रधान ने फोन करके बताया कि एक खेत मे गौवंश के अवशेष पड़े हुए हैं। यह जगह स्याना से 5 किमी दूरी पर है। स्याना जिला मुख्यालय से लगभग 40 किमी एक बढ़ा कस्बा है। स्याना कोतवाल सुबोध कुमार तुरंत मौके पर पहुंच गए। खेत में जानवरों के अवशेष थे, पुलिस सूत्रों की माने तो यह स्पष्ट नही था कि वो गाय के ही थे। 10 बजे सुबोध कुमार ने इसकी सूचना आला अधिकारियों को दी। वहां मौजूद बजरंग दल के कुछ कार्यकर्ताओ ने बताया कि वो जंगलो में घूम रहे थे तो उन्हें यह अवशेष मिले। बाद में बजरंग दल के जिला संयोजक योगेश राज की ओर से दर्ज हुई रिपोर्ट में भी इस बात का उल्लेख है कि वो अपने कुछ साथियों के साथ जंगल मे घूम रहे थे। उसके बाद उन्होंने भूतपूर्व प्रधान को बताया और उसने पुलिस को सूचना दी।

इसके बाद बजरंग दल के लोगो ने आसपास के लोगों को इसकी सूचना दी और मौके पर लोगो को जमा करना शुरू किया। यहां बड़ी संख्या में बजरंग दल से जुड़े युवा जुटने लगे। स्याना से 3 किमी दूर नया बांस के जिन सात लोगो को योगेश राज ने नामजद किया है उनमें से 2 नाबालिग हैं और 5 उस दिन गांव में नही थे। कुछ लोग गांव छोड़कर जा चुके हैं। खुद योगेश राज नया बांस का रहने वाला है।

3 दिसंबर को सुबह 10 बजे ही बजरंग दल द्वारा बुलाई गई भीड़ ने हंगामा करना शुरू कर दिया। मुरादाबाद हाईवे पर स्थित करीब की चिरंगावटी पुलिस चौकी पर पुलिस का संख्याबल कम था। बजरंग दल के इन्ही कार्यकर्ताओं ने इन गौवंश के कथित अवशेषों को ट्रैक्टर में लाद लिया और स्याना के मुख्य मार्ग पर जाम लगा दिया। यह मार्ग मुरादाबाद-बरेली मार्ग है और इस पर अत्यधिक आवाजाही चल रही थी। इंस्पेक्टर सुबोध कुमार लगातार इन युवकों को समझाने की कोशिश कर रहे थे। कुछ लोग बताते हैं कि जिम्मेदार लोगों ने उनकी बात मान ली थी मगर युवाओं में आक्रोश भरा हुआ था। जाम लगभग एक घंटे तक रहा। पुलिस ने हिकमत आजमाते हुए इज्तेमा से लौट रहे अकीदतमंदों का रास्ता बदलवा दिया। इरादा भांप कर पुलिस ने लाठियां पटकाकर जाम खुलवाने की कोशिश की जिसमें वो कामयाब हो गए। तब तक 12 बज गए और सीओ स्याना एसपी शर्मा भी वहां आ गए। पुलिस ने नामजद एफआईआर करने और तत्काल गिरफ्तारी करने की प्रदर्शनकारियों की बात मान ली। अवशेषों को अपने कब्जे में लेकर दबाने का प्रयास करने शुरू कर दिए।

इसके बाद अचानक से बात फिर बिगड़ गई योगेश राज के पास कोई फोन आया और उसने भीड़ को कुछ समझाया, इसके बाद युवक आक्रोशित हो गए। चिंगरावटी चौकी पर पथराव होने लगा, पुलिस ने हवा में गोलियां चलाईं, आक्रोशित युवाओं ने तमंचे से सीधे पुलिस पर गोलियां चलाईं। पुलिस को जान बचाकर भागना पड़ा। गोली गन्ने के खेत से चलाई जा रही थी। बवाल को संभालने की जद्दोजहद में जुटे स्याना कोतवाल सुबोध कुमार सिंह राठौर को आंख के ऊपर गोली लगी और उल्टे मुँह गाड़ी से नीचे गिर गए।

**इंस्पेक्टर सुबोध की हत्या के बाद सीओ एसपी शर्मा को जिंदा जलाने का प्रयास भी किया गया। उन्हें चौकी की दीवार तोड़ बचाया गया। यह भी जानकारी है कि उनके साथ थप्पबाजी भी हुई। कई पुलिसकर्मी इस बात को मीडिया और अपने अधिकारियों के सामने कह चुके है कि वो अगर जान बचाकर न भागते तो उन्हें मार दिया जाता। गौकशी की सूचने के बाद मौके पर सबसे पहले पहुंचे स्याना के तहसीलदार के अनुसार गौवंश के अवशेष पेड़ों और गन्ने के खेतों पर टांगे गए थे। आमतौर पर गौकशी करने वाले मांस को खेतों में लटकाते नहीं हैं।**

शहीद सुबोध कुमार के साथी पुलिसवाले बताते है कि भीड़ बहुत ज्यादा तो नहीं थी, इन्हें बार-बार समझा लिया जाता था वो मान जाते थे। मगर तभी अचानक कुछ युवक हंगामा करना शुरू कर देते थे। जैसे उन्हें किसी से निर्देश मिल रहे हों। सवाल खड़ा होता है जब पुलिस ने प्रदर्शनकारियों की सभी बात मान ली थी तो फिर क्या एकमात्र उद्देश्य बवाल ही था। बवाल के दौरान की कुछ वीडियो वायरल हो रही है। इनमें से एक में इंस्पेक्टर सुबोध अपनी गाड़ी से गोली लगने के बाद गिर गए है। 2 बजे इंसपेक्टर सुबोध राठौर की मौत हो जाती है। इसके बाद भी बवाल जारी रहता है। लगभग 20 वाहन जला दिए जाते हैं और चौकी में आग लगा दी जाती हैं।

**घटना का राजनीतिकरण**

अब इस घटना का राजनीतिकरण होने लगा है और न्याय की उम्मीद धीमी हो गई है। राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बुलंदशहर न आकर, शहीद सुबोध सिंह की विधवा और बच्चों से मुलाकात न कर, पहले तेलंगना में चुनाव प्रचार करते रहे और फिर मंगलवार को गोरखपुर में कबड्डी मैच देखा। रात को बयान जारी करके गौकशी करने वालों को जल्द से जल्द पकड़ने का निर्देश पुलिस को दिया। उस सरकारी प्रेस रिलीज में सुबोध सिंह की शहादत का कोई जिक्र तक नहीं था।

बुधवार को उन्होंने सुबोध सिंह की पत्नी रश्मि, बेटों श्रेय और अभिषेक को लखनऊ में बुलाकर 10 फीट की दूरी से बात की। परिवार को चुप कराने के लिए नौकरी देने, सड़क का नाम शहीद इंस्पेक्टर के नाम पर करने, बेटों की पढ़ाई के लिए लिया गया शिक्षा लोन आदि चुकाने का झुंझुना पकड़ा दिया गया।

बुलंदशहर के सांसद भोला सिंह खुलकर हिंदुत्व संगठनों के पक्ष में उतर आए है। हालात यह है कि थाने के नये प्रभारी ने कल रात स्थानीय पत्रकारों को फोन कर बुधवार सुबह 10 बजे अपने थाना परिसर में शोकसभा में पहुंचने का अनुरोध किया था। पत्रकार और कुछ गणमान्य नागरिक तय समय पर थाने पहुंच गए। इसके बाद यह सभा नही हुई। भरे मन से थाना इंचार्ज ने बताया कि उच्च अधिकारियों ने इसके लिए मना कर दिया। पुलिस सूत्रों के अनुसार अधिकरियों ने कहा कि शहीद के लिए एक दिन वेतन दे रहे हैं वो काफी है और किसी श्रंद्धांजलि सभा की आवश्यकता नही है। बताया जाता है कि भाजपा नेताओं ने थाने में यह शोकसभा रुकवा दी थी।

पिछले कुछ समय से उत्तर प्रदेश पुलिस की कुछ शहादतें काफी शर्मनाक रही हैं। इनमे मार्च 2013 में प्रतापगढ़ में हुई सीओ जियाउलहक की शहादत, जून 2016 में एसपी मुकुल द्विवेदी की शहादत और इसी साल शामली में एनकाउंटर के दौरान सिपाही अंकित तोमर की शहादत शामिल है। इन सभी मे शहीद को जरूरी सम्मान मिला है और न्याय की दिशा में कार्रवाई हुई है। अंकित तोमर की शहादत के बाद तो पुलिस में जबरदस्त कैम्पेन चला और सोशल मीडिया पर तमाम बड़े अफसरों ने डीपी बदल ली थी।

रिटायर्ड इंस्पेक्टर लाखन सिंह का कहना है कि इंस्पेक्टर सुबोध कुमार निश्चित तौर पर बहादुरी के साथ शहीद हुए हैं वो हर प्रकार के सम्मान के हकदार है। इससे पहले शहीद सुबोध राठौर के पुत्र अभिषेक बुलंदशहर में अपने पिता के शव तिरंगे में न लपेटने को लेकर सवाल उठा चुके हैं। हालांकि इसके बाद यूपी पुलिस के माध्यम से गलती सुधार ली गई। यूपी पुलिस के एडीजीपी आनंद कुमार ने स्पष्ट किया कि इंस्पेक्टर सुबोध राठौर निश्चित तौर पर हमारे लिए शहीद है। इसके बाद एटा पुलिस लाइन में उन्हें पूरा सम्मान दिया गया। यहां उनके शव को तिरंगे में भी लपेटा गया।

शहीद इन्सपैक्टर सुबोध कुमार सिंह

बजरंगी उथपाती योगेश राज

भाजपा उथपाती शिखर अग्रवाल

स्थानीय लोग मानते है कि पुलिस पर हमले में हिंदूवादी संगठनों पर आरोप है और स्थानीय सांसद भोला सिंह पूरी तरह से आरोपियों के पक्ष में उतर गए हैं। इसलिए अब सुबोध कुमार के असली हत्यारों के गिरेबान तक पुलिस के हाथ पहुंचेंगे इसकी सम्भावना कम है।

**वीडियो से मिल रही चुनौती**

सुबोध सिंह की हत्या की साजिश रचने वालों में से दो मुख्य आरोपियों योगेश राज और शिखर अग्रवाल के विडियो सोशल मीडिया पर सामने आए हैं। इसमें आरोपी खुलेआम सुबोध सिंह को भ्रष्ट से लेकर न जाने क्या क्या बता रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि दोनों ने दिल्ली में किसी बड़े आरएसएस नेता के ठिकाने पर शरण ले रखी है और वहीं से विडियो जारी किए जा रहे हैं। विडियो बहुत प्रोफेशनल लग रहे हैं। उन्हें मोबाइल से जल्दबाजी में नहीं बनाया गया है यानी उस नेता के घर पर बाकायदा तमाम सुविधाएं हैं, जिनके यहां दोनों छिपे हैं।

**योगी और पुलिस अफसरों को शर्म नहीं आ रही है**

**मुख्यमंत्री ने शुक्रवार को इस घटना के बारे में बयान दिया कि यह हादसा था, मॉब लिंचिंग नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि इंस्पेक्टर की शहादत एक हादसा थी, उनकी हत्या हिंदूत्व के ठेकेदार बने गुंडों ने नहीं की। अब मेरठ रेंज का एडीजी ने भी इसी तरह का बयान दिया कि मीडिया ही हिंदू संगठनों का नाम ले रहा है, हमने तो किसी का नाम नहीं लिया। अब मीडिया कह रहा है कि किसी फौजी ने सुबोध सिंह को मारा तो यह बात मीडिया ही जानता होगा। इस तरह इस पूरी कहानी को इतना उलझा दिया गया है कि शायद ही इस कांड के मुख्य साजिशकर्ता कभी पकड़े जाएं।**

छोटे बच्चे जिन्हें गौकशी में झूठा नामजद किया गया

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06